



इच्छा उपाध्याय

मासूमियत

सुनैना की उम्र लगभग १० वर्ष की थी, वो ६ वीं कक्षा की छात्रा थीं, पढ़ने में अत्यंत होनहार और कुशाग्र बुद्धि के साथ ही साथ खेलकूद, नृत्य, संगीत और पाक कला में निरंतर उन्नति कर रही थी। सुनैना के पिताजी हस्तकला में निपुण होने के कारण कालीन बना के उसी का व्यापार करते हुए उसी से अपना जीवन यापन करते थे, किन्तु उन्होंने अपने बच्चों के पालन पोषण में कोई कमी कभी भी नहीं आने दिया है उन्होंने अपने दोनों बेटों की तरह ही सुनैना को भी मान्यता देते थे।

उन्होंने कभी भी अपने बच्चों में भेदभाव नहीं किया है, प्रतिदिन समय से विद्यालय पहुंचना और छुटी होने पर घर लेके आने से लेकर बच्चों को निरंतर तीन - तीन ट्यूशन, पौष्टिक भोजन, अच्छे कपड़े सब सामग्री की समय - समय पर व्यवस्था बना के रखते थे, साथ ही साथ उन्होंने अपने बच्चों को सच्चाई के रस्ते में चलते हुए ईमानदारी से जीवन जीना सीखा रखे थे।

इन्हीं सब कारण से सम्पूर्ण हरिजन बस्ती में उनके परवरिश की प्रशंसा होती थी, कुछ लोगों का तो कहना था की भाई बच्चों की परवरिश में ही सारा पैसा खर्च कर दोगे कि कुछ आगे के लिए बचा के रखोगे ? ऐसी बातें का सुनैना के पिता हमेशा एक ही उत्तर देते थे कि भाई बच्चे पढ़ लिख लेंगे तो जीवन सुधार जाएगा और रही बात पैसे की तो वो तो बच्चे खुद से कमा लेंगे अगर उन्हें अपना जीवन यापन करना होगा तो। सुनैना हमेशा अपने कक्षा में प्रथम आने के साथ ही साथ नृत्य और संगीत में भी उत्कृष्टता का प्रदर्शन करती थी, विद्यालय से आने के बाद जब भी देखती की उसकी मां गलीचा बनवाने में पिता जी की मदद कर रही है तो बिना मां से बताए हुए ही घर का संपूर्ण काम कर डालती देती थी इतना ही नहीं सुनैना अपनी दादी का भी खाना बना के बर्तन घुल के रख अति थी और जब भी दादी कहती की -

दादी - तुम रहने दो कहीं जल न जाना बिटिया।

सुनैना - नहीं जलूंगी अब मैं बड़ी हो गई हूं।

दादी - तुम जाओ खेलो अभी पढ़ के आई हो मैं घुल लूंगी बर्तन।

सुनैना - स्कूल में ये नहीं बोल है दादी की घर जा के खोलना बस काम न करना।

दादी - रहने दो मैं कर लूंगी जाओ तुम्हारे मां काम करते हुए देखेगी तो गुरसा करेगी।

इतनी कम उम्र के इतना ज्यादा समझदार बच्ची को न जाने क्या सूझी एक दिन विद्यालय से आने के बाद जब उनने देखा कि मां - पिता जो काम कर रहे हैं तो उसने बिना मां को परेशान किए हुए ही खाना खा के घर का सारा काम करने के बाद बर्तन लेके नदी से धूल के रख कर दादी का बचा हुआ काम करने के बाद खेलने चली गई पता नहीं उसी दिन अचानक से उसने लड़कपन कर दिया और लगभग आधा किलोग्राम चावल ले के दुकान से खाने की चीज खरीद के खा लिया था इस बात की खबर उसके घर में किसी को भी नहीं

थी सुनैना को सामान खरीद के खाते हुए हुए उसके चाचा का लड़का धीरज जो उसी का सहपाठी था देख लिया और बोला की -

धीरज - सुनैना तुमने चोरी की है न?

सुनैना - नहीं मैंने चोरी नहीं किया है।

धीरज - तुमने चोरी किया है ,अगर न किया हो तो चलो पुछवाओ अपनी मां से ।

सुनैना - मत बताना मां को नहीं तो पिताजी बहुत ज्यादा डांटेंगे क्योंकि चोरी करना गलत बात होती है।

धीरज - मैं तो बता दूंगा ।

सुनैना - नहीं मत बताना अब नहीं करूंगी कभी भी नहीं मत बताना ।

धीरज - तुमने मुझे कल सवाल नहीं बताया था न और इसी लिए मुझे कक्षा में डांट खाने के लिए मिला है , मैं तो बता दूंगा तेरी मां से ।

इतना सुनते ही सुनैना डर के कारण घर भाग गई और कमरे के अंदर जा के दरवाजा बंद कर लिया इधर सुनैना के मां को लगा कि खाना बनने लगी है इसलिए शायद से नहीं आई है उसके पास आज इतने में धीरज आया और पूछा कि रवि सुनैना कहा गई ? धीरज की आवाज सुनैना के कानों में जैसे ही सुनाई दिए वो तुरंत बाहर आ के बिना किसी की तरफ देखे हुए अब कभी भी नहीं करूंगी कुछ मत बताओ बोल के अंदर भाग गई , उसके मां को लगा कि कक्षा में कुछ हुआ होगा शाम में पूछूंगी थोड़ी देर में जब सुनैना नहीं आई बाहर और छोटे भाई दीपक को भूख लगी तो खाना खाने के लिए जैसे ही अन्दर गया और देख के वह से भाग के आया बोला अम्मा देखो तो दीदी बंदर बन गई है बच्चे की बात को सब लोगो ने मजाक में ले लिया किंतु बार - बार बोलने पर पिता को लगा कि कहीं बंदर न हो अनादर और उन्होंने बोला जा कर देख आओ क्या है अनादर । मां जैसे ही अन्दर गई देखते ही उनके पैरो तले से जमीन खिसक गई १० मिनट पहले जो बच्ची घर का कम कर रही थी वहीं बच्ची खुद को चोरी के डर से डांट न मिले कही ये सोच के एक छोटे से बंस में फंसा के एक साड़ी के कपड़े के सहारे फंसा के अपनी जीवन लीला को ही समाप्त कर दिया।

और माता - पिता को आजीवन यही सोचने के लिए छोड़ गई कि ऐसा करने से पहले वो कितना डरी होगी ? क्या सोची होगी? इतनी मासूम बच्ची के दिमाक में ये करने का विचार कहा से आया होगा ?